History

by - Dr. Dilip kr. yadav.

B.A. PART - III Paper - VIth

Scanned with CamScanner

Ques भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में राजनीतिक तथा बौद्धिक पृष्ठभूमि।

राष्ट्र एक समूह होता है, जो जाति, भाषा, धर्म और भौगोलिक एकता के आधार पर राजनीतिक रूप से संगठित रहता है तथा राष्ट्रीय भावना जिसका होता है और जनता उस भावना से प्रेरित होकर राजनीतिक एकता और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने लगती है ऐसी स्थिति को राष्ट्रीय भावना की स्थिति कहते है। 19 वीं शताब्दी में भारत, इटली, जर्मनी आदि राष्ट्रीय राज्यों का उदय राष्ट्रीयता का ही परिणाम है। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राष्ट्रवाद के उदय के फलस्वरूप ही भारतीयों ने शासन में अपनी भागीदारी की मांग शुरू की थी, और अन्ततः राष्ट्र को परतंत्रता के बंधनों से मुक्ति मिली।

राष्ट्रवाद के उदय के संबंध में विभिन्न इतिहासकारों में मतभेद है। कितने इतिहासकार भारतीय राष्ट्रवाद को ब्रिटिश शासन की देन मानते हैं। उनका कहना है कि भारत किसी दृष्टि से एक राष्ट्र नहीं और न ही राष्ट्रीयता के आवश्यक तत्व मौजूद थे। लेकिन वास्तविकता यह है कि राष्ट्रवाद के उदय के सारे तत्व मौजूद थे। आवश्यकता केवल अनुकूल परिस्थितियों की थी, जो ब्रिटिश शासन के दौरान उत्पन्न हुई। राष्ट्रवाद के उदय पर विचार करने पर हम पाते है कि यह किसी एक दिन और एक कारण का परिणाम नहीं था वरन विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और बौद्धिक पृष्ठभूमि का परिणाम था। इस संबंध में एक कथन को उचित ठीक ही प्रतीत होता है कि— "A giant of the forest with millennia behind it."

राजनीतिक कारण → भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में राजनीतिक कारण मुख्य रूप से जिम्मेदार था। राजनीतिक कारणों के विभिन्न पहलुओं को हम निम्नलिखित शीर्षक में देख सकते हैं

राजनीतिक एकता → मुगल साम्राज्य के पतन के उपरान्त भारत की राजनीतिक एकता प्रायः लुप्त हो चुकी थी, भारतीय नरेशों की आपसी द्वेष का लाभ उठा कर अंग्रेज

में राजनीतिक साम्राज्य कायम की। साम्राज्यवादी अंग्रेजों ने महत्वाकांक्षा उत्तर हिमालय से लेकर दक्षिण में कन्या कुमारी तक, पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में सिंध तक भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बाँधा, यह मुगलों और मौर्यों से भी विस्तृत राज्य था। प्रो० डी० पुन के अनुसार "ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने कई आकांक्षाओं के बावजूद भारत को नीचे लाकर के अधीन एकता प्रदान की।" इस तरह सम्पूर्ण भारत में एक केन्द्रीय शासन स्थापित व्यवस्था ने राजनीतिक एकता प्रदान की।

यातायात के साधनों का विकास→ आधुनिक यातायात के साधनों का भारतीय राष्ट्र निर्माण में काफी जोरदार योगदान रहा है। ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के बाद रेल, डाक, सड़क, पुल आदि का निर्माण किया गया। यद्यपि यह साम्राज्य की सुरक्षा एवं आर्थिक शोषण की दृष्टि से किया गया था। लेकिन इससे भारतीयों को लाभ हुआ। एक जगह से दूसरे जगह जाना, एवं समाचार भेजने का कार्य आसान हो गया। अतः अप्रत्यक्ष रूप से भारतीयों को संगठित होने तथा एक राजनीतिक सूत्र में आबद्ध होने में सहायता मिली।

भारत में शांति तथा प्रशासनिक एकता→ 18 वीं सदी के अराजकता के बाद अंग्रेजों ने भारत में शांति एवं व्यवस्था उत्पन्न कर दी। इससे भारत में चली आ रही सांस्कृतिक एकता को एक नयी राजनीतिक एकता प्रदान की। डॉडवेल के शब्दों में — "ब्रिटिश राज्य एक प्रकार का लोहे का ढाँचा था जिसने भारत के आन्तरिक शरीर को ऐसे समय तक जकड़ कर बाँधे रखा जबतक कि विस्थापित हड्डियाँ तथा आन्तरिक परिवर्तन से टूटे हुए तन्तु धीरे-धीरे जुड़ न जाए और शरीर पुनः अपनी आन्तरिक एकता तथा सम्बद्धता प्राप्त नहीं कर ले।"

प्रेस अधिनियम→ साम्राज्यवादी शासक लिटन की नीति का समाचार पत्रों ने कड़ा विरोध किया। इससे घबराकर अंग्रेज प्रेस पर प्रतिबन्ध लगाने के उद्देश्य से एक-एक ...

किया। जिसे वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम के नाम से जाना जाता है। इसे काला कानून के नाम से भी जाना जाता है। इसके विरोध में सम्पूर्ण देश में व्यापक विरोध हुआ। इसे राष्ट्रवादी प्रेमियों ने कालाकानून कहा।

<u>लोकसेवा में आयु की कमी</u> → 1876 ई० ब्रिटिश सरकार ने भारतीय लोकसेवा (I.C.S.) की आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया गया। इससे भारतीयों का इस परीक्षा में सम्मिलित होना मुश्किल हो गया। इसके विरोध में जगह जगह राजनीतिक सभाओं का आयोजन किया गया, इसके फलस्वरूप विभिन्न नगरों में राष्ट्रीय जागृति का आग सा फैल गया तथा भारतीयों में एकता की भावना जाग्रत हुई।

<u>इल्बर्ट विधेयक पर विवाद</u> → लिटन के काल में ऐसे नियम थे कि कोई भी यूरोपीय व्यक्ति की अपराध की सुनवाई कोई भी भारतीय दण्डाधिकारी नहीं कर सकता था। लार्ड रिपन ने इस नियम को समाप्त कर सभी को न्याय के सामने बराबर कर दिया। अंग्रेज पदाधिकारियों ने जमकर इसका विरोध किया तथा रिपन को झुकना पड़ा तथा प्रस्तावित विधेयक को वापस ले लिया। इस घटना ने भारतीयों की आँखें खोल दी तथा एकता का महत्व समझ में आ गया।

<u>दरबार समारोह</u> → लिटन के शासनकाल में जहाँ एक ओर भारत में भीषण अकाल पड़ा हुआ था। हजारों लोग जहाँ भूख की ज्वाला में जलकर मृत्यु का ग्रास बन रहे थे, वहीं दूसरी ओर दिल्ली में भव्य दरबार का आयोजन किया गया तथा महारानी विक्टोरिया को साम्राज्ञी घोषित किया गया तथा लाखों रुपया पानी की तरह बहाया गया। इससे भारतीयों में ब्रिटिश सरकार के प्रति घृणा का वातावरण बना।

<u>शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि</u> → शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने राष्ट्रवाद के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अंग्रेजी माध्यम द्वारा शिक्षा का प्रचलन से भारतीयों को शिक्षा ग्रहण पाश्चात्य देशों को जाकर नीति

सम्पर्क में आने का अवसर तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति का ज्ञान राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा का दर्जा →

नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। इससे संपूर्ण भारतीय क्षेत्र को एक भाषा मिल गया, जिससे विभिन्न प्रान्तों के भाषा-भाषी अंग्रेजी के माध्यम से अपने विचारों का आदान-प्रदान करने लगे और एक दूसरे को बेहतर ढंग से समझने लगे। यह राष्ट्रवाद के उदय के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग का उत्थान →

अंग्रेजों के प्रशासनिक तथा आर्थिक क्षेत्र की नवीन प्रक्रिया से नगरों में एक नवीन मध्यमवर्गीय नागरिकों की एक श्रेणी उत्पन्न हुई। इस नवीन श्रेणी ने तत्परता से अंग्रेजी भाषा सीख ली। यह नवीन वर्ग अपनी शिक्षा, समाज में उच्च स्थान तथा प्रशासक वर्ग के समीप आ गए। प्रो० स्पीयर ने लिखा है कि — "यह नवीन मध्यमवर्ग एक संगठित अखिल भारतीय वर्ग था, यह भारतीय समाज का छोटा सा अंग था लेकिन गतिशील अंग था इसमें उद्देश्य की एकता तथा आशा की भावना थी।"

भारतीय साहित्य और समाचार पत्रों का योगदान —

इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रत्येक देश में राष्ट्रवाद की भावना को फैलाने में बुद्धिजीवी वर्ग की लेखनी का महत्वपूर्ण योगदान होता है। जिस प्रकार रूसो एवं वाल्टेयर की रचना फ्रांस की राज्यक्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी, उसी प्रकार भारतीय राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि कतिपय लेखकों द्वारा तैयार की गई। इस दिशा में दीनबन्धु रचित नीलदर्पण, बंकिमचन्द्र चटर्जी रचित आनंद मठ, भारतेन्दु विचारित भारत दुर्दशा जैसे साहित्यों ने राष्ट्रवाद के विकास में चिंगारी का काम किया। बंकिम चन्द्र चटर्जी रचित आनंद मठ देश प्रेम का बाइबिल माना जाता है, वहीं उनकी वन्देमातरम गीत तो नवयुवकों के गले का हार ही बन गया।

अंग्रेज तथा भारतीय दोनों प्रकार के विद्वानों ने भी इस भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया। इन विद्वानों [illegible] वेदों, उपनिषदों [illegible] हिंदू [illegible] कृतियों, [illegible] का [illegible] अनुवाद [illegible] अंग्रेजी [illegible] भाषा में किया। इसके [illegible] भारतीय [illegible] राजेंद्रलाल [illegible] भंडारकर, [illegible] विवेकानंद [illegible] भारतीय संस्कृति के [illegible] ने भारतीय [illegible] के अतीत और राष्ट्रवाद की भावनाओं को प्रोत्साहित किया।

पाश्चात्य शिक्षा पद्धति का प्रभाव → ब्रिटिश शासन द्वारा जो अंग्रेजी शिक्षा पद्धति लागू की गई वह भारत में [illegible] भारतीय बुद्धिजीवी तैयार कर दिए। इस शिक्षा पद्धति को लागू करने के पीछे उनका उद्देश्य ऐसा वर्ग पैदा करना था जो रंग से भारतीय और विचार से अंग्रेज हो, लेकिन यह ब्रिटिश शासन को भारी पड़ा। इस संबंध में [illegible] ने ठीक ही लिखा है कि — "यह शिक्षा विश्वविद्यालयों ने भारत शासन को [illegible]" [illegible] ने कहा था कि "पाश्चात्य शिक्षा की नई आवाज से भारतीय जाग उठे।"

पाश्चात्य विचारों का → अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पाश्चात्य/यूरोपीय उदारवादी [illegible] विचारों के संपर्क में आया। वे मिल्टन, बर्क, बेंथम, रूसो आदि के स्वतंत्रता, समानता तथा लोकतंत्र के बारे में परिचय हुआ। वे [illegible], इटली आदि के तरह एक स्वतंत्र भारत की कल्पना करने लगा। इस संबंध में रैम्जे मैकडोनाल्ड ने ठीक कहा था कि "हमें [illegible] का अभिप्राय [illegible] [illegible] को जिसे भारत ने हमसे (अंग्रेजों) सीख कर और उनका प्रयोग हमारे (अंग्रेजों) के विरुद्ध कर रहा है।"

भारतीय समाज तथा धर्म सुधारकों का योगदान → राष्ट्रवाद के विकास में समाज सुधारकों एवं धर्म सुधारकों का महत्वपूर्ण योगदान था, जिन्होंने पाश्चात्य दर्शन के प्रकाश में अपने प्राचीन पुनः परीक्षण करना आरंभ किया, इन [illegible]

Scanned with CamScanner

रामकृष्ण मिशन जैसे संस्थाओं, समाज में व धर्म में फैली बुराइयों को दूर कर अपने अतीत की गौरव की याद दिलाई इससे कि राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

<u>निष्कर्ष</u>→ इस तरह हम देखते हैं कि राष्ट्रवाद के विकास में अनेक तत्वों तथा अनुकूल परिस्थितियों का योगदान था जिसमें राजनीतिक तथा बौद्धिक पृष्ठभूमि का योगदान था। कुछ अंग्रेज विद्वान यह मानते हैं कि भारत में राष्ट्रवाद अंग्रेजी शासन की देन है। कूपलैंड की शब्दों में — भारतीय राष्ट्रवाद अंग्रेजी राज की संतति है। लेकिन यथार्थतः देखा जाए तो कूपलैंड महोदय यह भूल गये कि "भारतीय राष्ट्रवाद उनकी अनैच्छिक सन्तान थी, जिन्हें उन्होंने जन्म के समय ही दूध पिलाने से इंकार कर दिया और उसका गला घोंटने का प्रयत्न किया। अन्त में कह सकते हैं कि "भारतीय राष्ट्रवाद उस दशा में सम्पूर्ण संसार में उभरते राष्ट्रवाद तथा आत्मनिर्णय की भावना, भारतीय पुनर्जागरण, अंग्रेजों द्वारा प्रारंभ किये गए आधुनिकीकरण का परिणाम तथा भारत में चल रही अंग्रेजी औपनिवेशिक नीतियों की तीव्र प्रतिक्रिया का परिणाम था।"